International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 27-02-2022, Accepted: 11-03-2022, Published: 28-03-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 58-59

फर्रूखाबाद घराने की स्थापना, विकास और वादन शैली

शुभम वर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संगीत विभाग, सी. एस. जे. एम. विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
तबला वादन के इस ख्याति प्राप्त घराने को, पूरब का प्रथम घराना अर्थात 'लखनऊ घराने' की ही एक शाखा मानना चाहिए। इस घराने के संस्थापक फर्रूखाबाद गाँव के निवासी सुप्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद हाजी विलायत अली खाँ साहब थे। उस्ताद हाजी साहब फर्रूखाबाद घराने के संस्थापक एवं प्रथम वादक रहे है। इसके पश्चात् फर्रूखाबाद घराने का विकास हाजी साहब की परम्परा में उनके शिष्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हाजी साहब को दहेज में जो गतें प्राप्त हुई वह सबसे बड़ा फर्रूखाबाद घराने के विकास का कारण था। फर्रूखाबाद घराना खुला बाज की श्रेणी में आता है। पं0 विजय शंकर मिश्र के मतानुसार फर्रूखाबाद घराना की वादन शैली दिल्ली व लखनऊ घरानों की शैलियों का मिश्रण है जिसे 'मणिकंचन संयोग' कहा गया। मुख्य शब्द–गत, चलन, रौ, पेशकार आदि।

मूल शब्दः फर्रूखाबाद घराने, स्थापना, विकास, वादन शैली

प्रस्तावना

तबला वादन के इस ख्याति प्राप्त घराने को, पूरब का प्रथम घराना अर्थात 'लखनऊ घराने' की ही एक शाखा मानना चाहिए। इस घराने के संस्थापक फर्रूखाबाद गाँव के निवासी सुप्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद हाजी विलायत अली खाँ साहब थे। उस्ताद हाजी साहब फर्रूखाबाद घराने के संस्थापक एवं प्रथम वादक रहे है। इसके पश्चात् फर्रूखाबाद घराने का विकास हाजी साहब की परम्परा में उनके शिष्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हाजी साहब को दहेज में जो गतें प्राप्त हुई वह सबसे बड़ा फर्रूखाबाद घराने के विकास का कारण था। फर्रूखाबाद घराना खुला बाज की श्रेणी में आता है। पं0 विजय शंकर मिश्र के मतानुसार फर्रूखाबाद घराना की वादन शैली दिल्ली व लखनऊ घरानों की शैलियों का मिश्रण है जिसे 'मणिकंचन संयोग' कहा गया। मुख्य शब्द–गत, चलन, रौ, पेशकार आदि।

फर्रूखाबाद घराने की स्थापना

तबला वादन के इस ख्याति प्राप्त घराने को, पूरब का प्रथम घराना अर्थात 'लखनऊ घराने' की ही एक शाखा मानना चाहिए। इस घराने के संस्थापक फर्रूखाबाद गाँव के निवासी सुप्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद हाजी विलायत अली खाँ साहब थे। सिद्धार खाँ दाढ़ी जी के वंशज उस्ताद बख्शू खाँ जिनका सम्बन्ध लखनऊ घराने से था, ने हाजी विलायत अली खाँ साहब को तबले की तालीम दी। उस्ताद हाजी विलायत अली जी का निकाह उस्ताद बख्शू खाँ की पुत्री मोती बीबी से हुआ। मोती बीबी घरानेदार तबला वादिका थी। निकाह के समय उस्ताद बख्शू खाँ जी ने हाजी साहब को 500 गतें दहेज में प्रदान करी थी और ये सभी गतें 'दहेज की गत' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

उस्ताद हाजी साहब ने सात बार 'हज' यात्रा करी तथा अपने अल्लाह से सदैव यही दुआ मांगी थी कि उनकी रचनाएँ प्रभावशाली हो, क्योंकि उस्ताद हाजी विलायत अली खाँ साहब उत्कृष्ट तबलावादक, अच्छे गुरू एवं रचनाकार थे। उनकी रचनाएं विद्वानों के बीच प्रस्तुत होती थी तथा उन्हें बहुत दुआएं मिलती थी।

उस्ताद हाजी विलायत अली प्रारम्भ से ही धार्मिक प्रवृत्ति वाले व्यक्ति थे। हकीम मोहम्मद जी द्वारा लिखित पुस्तक 'मदन–ए मौसीकी में उल्लेखित है कि ''हाजी साहब ने सात बार हज करने के बाद अपने स्वतंत्र कार्यक्रम करना बंद कर दिए और बाद में उन्होंने तबले की अनेक रचनाएं की और अपने शिष्यों को सिखाई।''[1]

इनका वादन अत्यन्त क्लिष्ट एवं लयकारी युक्त था। बुद्धिजीवियों के मतानुसार ऐसा नायक और रचनाकार सदियों में ही जन्म लेता है।

उस्ताद हाजी विलायत अली साहब के उत्तराधिकारी उस्ताद नन्हें खाँ हुए जो अवध के अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में कलाकार थे।

फर्रूखाबाद घराने का विकास

''उस्ताद हाजी साहब फर्रूखाबाद घराने के संस्थापक एवं प्रथम वादक रहे है। इसके पश्चात् फर्रूखाबाद घराने का विकास हाजी साहब की परम्परा में उनके शिष्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हाजी साहब को दहेज में जो गतें प्राप्त हुई वह सबसे बड़ा फर्रूखाबाद घराने के विकास का कारण था।''[2]

''जब हाजी साहब लखनऊ में थे तब उन्होंने अपनी नई बंदिशों की रचना की परन्तु वह सन् 1857 में रामपुर आए तब उन्होंने उनके पास जो लखनऊ घराने का ज्ञान था, उस पर अपने चिंतन और मनन से एक नई वादन पद्धति को जन्म दिया जो 'फर्रूखाबाद घराना' नाम से प्रसिद्ध हुई। उस समय रामपुर के नवाब युसुफ अली संगीत और नृत्य के शौकीन थे और उन्होंने अपने दरबार में अनेक संगीतज्ञों को स्थान दिया था उसमें हाजी साहब को भी रामपुर दरबार में स्थान

मिला। बाद में हाजी साहब के शिष्यों ने भी इस दरबार में निरंतर तबला वादन की सेवा दी। अतः रामपुर दरबार का भी फर्रूखाबाद घराने के विकास अनन्य योगदान रहा है।''[3]

उस्ताद हाजी विलायत अली साहब के चार पुत्र थे उस्ताद निसार हुसैन, अमार अली खाँ, हुसैन अली खाँ एवं उस्ताद नन्हें खाँ। इन चारों का भी फर्रूखाबाद घराने के विकास में अमूल्य योगदान रहा है। उस्ताद निसार हुसैन खाँ रामपुर के दरबारी कलाकार थे। उस्ताद अमान अली खाँ जो लकवा रोग से पीड़ित थे, ने अपने शिष्यों को तालीम दी। उस समय वह जयपुर में निवास करते थे। इनके बहुत से शिष्य हुए जिनमें पण्डित जियालाल जी कथक नृत्य के निपुण कलाकार थे। हाजी विलायत अली खाँ साहब के तीसरे पुत्र हुसैन अली खाँ ने अपने पिता जी से तालीम पाई थी। उनके प्रमुख शिष्यों में उस्ताद मुनीर खाँ साहब ने मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश के साथ–साथ महाराष्ट्र में भी फर्रूखाबाद घराने का प्रचार व प्रसार किया। इनके चौथे पुत्र उस्ताद नन्हें अली खाँ के पौत्र उस्ताद मसीत खाँ साहब जो प्रारम्भ में रामपुर के दरबारी कलाकार थे परन्तु बाद में उन्होंने कलकत्ता को अपनी कर्मभूमि बनाया तथा अपने शिष्यों को तालीम दी। इनके पुत्र उस्ताद करामत उल्ला खाँ के पुत्र उस्ताद साबिर खाँ साहब ने कलकत्ता में फर्रूखाबाद घराने के प्रचार व प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हाजी साहब के दामाद उस्ताद हुसैन बख्श जी ने भारत का पश्चिम बाज में फर्रूखाबाद घराने का प्रचार किया। उनकी परम्परा में उस्ताद शेख दाउद ने फर्रूखाबाद घराने का विकास किया। उस्ताद शेख दाउद को ''दक्षिण का थिरकवा'' के नाम से भी जाना जाता है।

फर्रूखाबाद घराने के विकास में हाजी साहब के शिष्यों में उस्ताद चुड़ियावाले इमाम बख्श एवं उस्ताद सलारी मियाँ साहब का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उस्ताद सलारी मियाँ ने चाला अथवा चलन की रचना की। दिल्ली बाज के पेशकार में आवश्यक परिवर्तन कर फर्रूखाबाद घराने का स्वतन्त्र पेशकार के रूप में प्रस्तुतीकरण दिया। जिसे वर्तमान में तबला वादक अपने सोलो वादन के शुरूआत में बजाते है। पेशकार की रचना उस्ताद अहमद जान थिरकवा खाँ साहब के द्वारा खूब प्रसिद्ध हुई।

''तबले पर दिल्ली और पूरब पुस्तक के लेखक श्री सत्यनारायण वशिष्ट जी के अनुसार, चुड़ियावाले इमाम बख्श जी की परम्परा में उनके शिष्य एवं वारस को 'भटौला परम्परा' के नाम जाना जाता था।''[4]

उस्ताद जहाँगीर खाँ जो इन्दौर में रहते थे वह उस्ताद मुबारक अली खाँ के शिष्य थे। अतः वह भी हाजी जी परम्परा में थे। उस्ताद जहाँगीर खाँ जी ने इन्दौर में फर्रूखाबाद घराने का प्रगचार प्रसार किया।

फर्रूखाबाद घराने की वादन शैली

फर्रूखाबाद घराना खुला बाज की श्रेणी में आता है। पं0 विजय शंकर मिश्र के मतानुसार फर्रूखाबाद घराना की वादन शैली दिल्ली व लखनऊ घरानों की शैलियों का मिश्रण है जिसे 'मणिकंचन संयोग' कहा गया।

फर्रूखाबाद घराने की वादन शैली में नृत्य का प्रभाव न होकर पखावज का प्रभाव दिखाई देता है।

उस्ताद अहमद जान थिरकवा के अनुसार तबले पर अलग–अलग वाद्यों का प्रभाव बंदिश स्वरूप दिखाई देता है। उसके बावजूद भी वह बंदिश स्वतन्त्र रूप से तबले की ही प्रतीत होती है। इस आधार पर फर्रूखाबाद घराने का तबला शुद्ध एवं स्वतन्त्र है जिसके ऊपर अन्य किसी भी वाद्य की ध्वनि नहीं सुनाई देती है। इसीलिये यह घराना सम्पूर्ण घराना माना गया है क्योंकि यह सोलो वादन एवं संगत दोनों के लिये ही उपयुक्त है। इस घराने की वादन शैली में लखनऊ घराने का थपिया बाज और दिल्ली घराने का किनार का बाज का प्रभाव दृष्टिगत है। इस घराने के कलाकार रचनाओं में मेदान (लव) और चाटी का प्रयोग बहुत ही सुन्दर तरीके से करते है। इसी कारण से इस घराने के बोलों की ध्वनि आकर्षक एवं कर्णप्रिय लगती है।

फर्रूखाबाद घराने में लखनऊ घराने की कुछ विशेषताएं तो है ही साथ ही साथ वादन शैली में विशिष्ट प्रकार का चाला अथवा चलन, गत और रौ के समावेश ने इसे नवीन स्वरूप दिया है।

फर्रूखाबाद घराने की विशेषताएं निम्नवत् है–

1. सोलो वादन की प्रस्तुति के लिये यह बाज सफल एवं उत्तम है। क्योंकि स्वतन्त्र वादन के लिये इस बाज में सभी विशेषताएं सम्मिलित है। फर्रूखाबाद घराने के ताबलिकों ने बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की।
2. फर्रूखाबाद घराना पूरब बाज की एक शाखा होते हुए भी इसकी वादन सामग्री सभी घरानों से भिन्न है।
3. अन्य घरानों की भाँति फर्रूखाबाद घराने में पेशकार और कायदे आदि तो बजते ही है। इस घराने के रेलों को एक नवीन रूप दिया गया है जिसे वे 'रौ' कहते है।
4. तबले में गत बजाने की प्रथा इस घराने के तबला वादकों से प्राप्त हुई है। इस घराने के संस्थापक हाजी विलायत अली साहब और सलारी मियां की गते संगीतज्ञों के बीच बड़े सम्मान से पढ़ी जाती है। यहाँ की गतों को विभिन्न लयकारी में प्रस्तुत किया जाता है तथा मुख्य रूप से 'धिरधिर' और 'तकतक' जैसे बोल समूह का प्रयोग विशेष रूप से होता है। इस घराने की मुख्य विशेषता 'चलन' है जिसे हम चाला भी कहते है। चलन की प्रथा अन्य किसी घराने में नहीं है।
5. इस घराने की वादन शैली में 'धिनगिनतक' धिरधिर किटतक धेत, नगनग, 'तकतक' आदि बोलों का अधिक प्रयोग होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. करमईमाम, मोहम्मद, मदन–ऐ–मौसिकी
2. सक्सेना, वसुधा, ताल के लक्षण स्वरूप में एकरूपता
3. मिस्त्री, डॉ0 आबान, तबला और पखाव
4. ज के घराने एवं परम्पराएं
5. वशिष्ट, सत्यनारायण, तबले पर दिल्ली और पूरब